

# भयमुक्त मन वसुधैव कुटुम्बकम् का पर्याय

## वाद-विवाद

वंशिका शर्मा, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, साकेत, कक्षा 9 ए

### पक्ष

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्  
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्

**व**सुधैव कुटुम्बकम्- यह सूक्ति हमें सिखाती है कि पूरी पृथ्वी ही परिवार है। यह विचार अभी हाल ही में भारत में सम्मन् जी-20 का आदर्श वाक्य था। यह विचार पूरे विश्व में शान्ति और सद्भावना का लक्ष्य लेकर एक भयमुक्त वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करता है। इसका संदेश यही है कि पूरी पृथ्वी एक ऐसे परिवार के सामान है जहाँ हर मन निडर हो, भयमुक्त हो। जहाँ सबको अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए एक भयमुक्त वातावरण में जीने का अवसर मिले। क्या डर के माहौल में शान्ति स्थापित हो सकती है? किसी को डराकर शान्ति बनाना उचित है? तलवार की नोक पर रखकर किसी को शान्त वातावरण कैसे दिया जा सकता है? आज दुनिया एक और विश्वयुद्ध की ओर बढ़ रही है और परमाणु युद्ध के डर से रोज डर कर जी रही है। आतंकवादियों द्वारा पैदा की गई दहशत के घेरे में रोज जीती-मरती है। आज की इस डरी-सहमी मानवता को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा ही सही मायनों में एक भयमुक्त वातावरण प्रदान कर सकती है। 'जियो और जीने दो' की नीति ही दुनिया को एक बेहतर भविष्य प्रदान कर सकती है। हमें एक ऐसा विश्व बनाना है जहाँ हर मन शान्त हो, निर्भय हो। उससे उलझी हुई दुनिया की आधी समस्याएँ खुद ही सुलझ जाएँगी।

हम सब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक दूसरे पर निर्भर हैं। अतः फिर भय कैसा ? एक ही अपनी पृथ्वी प्यारी, एक ही सबका है परिवार न हो भय किसी को किसी से, बस हो मन में प्यार ही प्यार

### विपक्ष

अविका पांडे, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, साकेत, कक्षा 9 डी

विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीत,  
बोले राम सकोप तब, भय विन होत न प्रीत।

अपने विचार के समर्थन हेतु श्री रामचरित मानस के दोहे के साथ अपनी बात रखती हूँ वसुधैव कुटुम्बकम् की स्थिति भयमुक्त होकर संभव ही नहीं है। वसुधैव कुटुम्बकम् का मतलब है कि सम्पूर्ण मानव जाति एक ही परिवार की तरह है, जो सहयोग, सामंजस्य और समरसता के पर आधार टिका है। भयमुक्ति केवल व्यक्तिगत स्थिति है, जो व्यक्ति की मानसिक स्थिति को संदर्भित करती है लेकिन यह समाज के बीच एकात्मता के लिए पर्याप्त नहीं है। अतः भयमुक्त मन वसुधैव कुटुम्बकम् का पर्याय हो ही नहीं सकता। भय व्यक्ति के अन्दर उत्पन्न होने वाला एक अनुभव है जो उसे खतरे के सामने सतर्क रहने की प्रेरणा देता है। यह आत्मरक्षा और सुरक्षा की भावना को उत्पन्न करता है और इस स्थिति में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना और गहराई से परिलक्षित होती है। मैं अपने विपक्षी मित्रों से पूछना चाहती हूँ क्या विश्व स्तर पर सामाजिक समरसता तथा सौहार्द देश-विरोधी शक्तियों में भय स्थापित किए बिना संभव है? क्या एक देश की शस्त्र क्षमता विरोधी देशों में भय



उत्पन्न कर उन्हें आक्रमण करने से नहीं रोकती? इतिहास गवाह है कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक होमी भाभा ने भी तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू को ऐसा ही कुछ वक्तव्य दिया था जब हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा विफल हुआ और 1962 में भारत की चीन के हाथों करारी हार हुई थी। यह तैश 'संतुलन' के सिद्धान्त की पुष्टि करता है। वर्तमान समय में क्यों भारत की मजबूत स्थिति, जी-20 सम्मेलन में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका, वसुधैव कुटुम्बकम् को परिभाषित कर पाई? उत्तर हम सब जानते हैं। एक लैटिन कहावत के अनुवाद के अनुसार यदि आप शान्ति चाहते हैं तो युद्ध के लिए तैयार रहें। अतः भय शान्ति के लिए आवश्यक स्थिति है।

## डायरी लेखन

चर्लिन, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल  
रायपुर, कक्षा 6

18 मई 2024, शुक्रवार  
रात 9 बजकर 30 मिनट

प्रिय डायरी,  
आज का दिन मेरे लिए बहुत अच्छा था क्योंकि स्कूल द्वारा ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन किया गया था। मैं पूरे साल इस दिन का इंतजार करती रही थी। यह कैप चार दिन के लिए था। इसमें चार मुख्य गतिविधियाँ- बैकिंग, डांस, फन फील्ड और क्राफ्ट शामिल थे। समर कैप में रहना वाकई मजेदार था। मुझे बैकिंग में सबसे ज्यादा मजा आया क्योंकि मैंने कभी केक नहीं बनाया था। बैकिंग क्लास में अपने दोस्तों के साथ मैंने स्वादिष्ट खजूर केक और वेनिला चोको चिप कुकीज़ बनाई। डांस क्लास में हमने जुम्बा डांस का आनंद लिया। हम सब ने मिलकर खूब मस्ती की, हम सब बहुत खुश थे। मैंने क्रिकेट खेला और क्रिकेट के बारे में बहुत कुछ सीखा भी जो हम नहीं जानते थे और अंततः शिल्प कक्षा में हमने बेकार सामग्री से लालटेन बनाई। ये चार दिन अद्भुत, आकर्षक और आनंददायक थे। यह वास्तव में मददगार थे हमें फिर से ऊर्जावान और तरोताजा करने के लिए।



## कविता

### वीरो को नमन

सिद्धि सती, ऐमिटी इंटरनेशनल  
स्कूल, मयूर विहार, कक्षा 3 सी

वतन के लाल तुमको देश का  
कोटि कोटि प्रणाम है,  
माँ भारती के कण - कण को तेरे  
शौर्य पर अभिमान है।

झूमे तिरंगा शान से  
प्रहरी जो तुमसा है मिला,  
देश की सीमाओं को  
तुमसे ही तो है, बल मिला।

रहते हैं हम सब शांति से  
रक्षक जो तुम बनकर खड़े हो,  
है नमन उन माताओं को  
जिनका लाल, देश पर कुर्बान है।

नाम से हैं, इनके काँपते  
इस देश के गद्दार हैं,  
सीने को, ताने हैं खड़े  
जैसे कोई चट्टान है।

तुम्हारे शौर्य से है गूँजती  
देश की माटी मेरी,  
हर नागरिक इस देश का  
इन वीरों का कर्जदार है।

## करें रिश्तों की डोर मजबूत

चाहत भाटिया, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,  
नवी मुंबई, कक्षा 9 ए

**म**नुष्य सामाजिक प्राणी है, जिसे जीवन में प्रगति करने के लिए दूसरों के सहयोग की आवश्यकता होती है। इस प्रकार अन्य लोगों से संवाद करने से तनाव, चिंता और उदासी से राहत मिल सकती है। एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने और अपने परिवार के साथ संवाद करने के लिए वेबसाइट, ऐप्स आदि का उपयोग करते हैं। ऐसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म इंटरनेट के अपनी मन-पसंद तस्वीरें डालने/पोस्ट करने की अनुमति देते हैं। कुछ लोग तस्वीरें देखते हैं और कुछ समय बाद भूल जाते हैं, जबकि कुछ लोग दूसरों के साथ अपनी तुलना करने लग जाते हैं। वे स्वयं के बारे में अच्छा महसूस नहीं करते, और अपना आत्मविश्वास एवं आत्म-सम्मान भी खो देते हैं। सोशल मीडिया के आने से पहले लोग एक-दूसरे से मिलना और बातचीत करना पसंद करते थे लेकिन अब चीजें बदल गई हैं। लोग एक-दूसरे से मिलने से बचते हैं, खुद को घर पर अकेला रखते हैं। पहले लोग एक-दूसरे को बधाई देने के लिए उनके घर जाते थे और उन्हें भी अपने घर आमंत्रित करते थे। अँग्रेजी में एक मुहावरा है समय बदलता है, और लोग



भी। अब तो निमंत्रण भी चैट के माध्यम से देकर औपचारिकता पूरी कर दी जाती है। समय है प्रगति के साथ-साथ आगे बढ़ने का न कि स्वयं को भूलने का। भूले-बिसरे रिश्ते पुनः संजोने का। वसुधैव कुटुम्बकम् इस उक्ति को चरितार्थ करने के लिए पहले अपने पारिवारिक रिश्तों को महत्व देना आवश्यक है। सुबह का भूला अगर शाम को वापस आ जाता है तो उसे भूला नहीं कहते हैं। वैसे ही समय रहते पारिवारिक रिश्तों को मजबूत कर लें तो इससे अधिक समझदारी वाली बात कुछ और हो ही नहीं सकती। तो चलिए एक कदम बढ़ाएँ अपने पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय रिश्तों को मजबूत डोर से बाँधने के लिए।

अवनी वैद्य, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल  
नौएडा, कक्षा 9 एच

**जै**से ही रात को काली चादर धरती को लपेटती है, खिड़की से छन कर आती हुई चाँद की रोशनी मेरे मन की सारी आकांक्षाओं पर प्रकाश डालती है। मेरे नेत्र रक्त से लाल हो कर नींद के लिए पुकारते हैं, परंतु मैं गहरी सोच में डूबी हूँ। मेरे प्रश्न एक असीम सागर के समान हैं जो मेरे आत्मविश्वास को अपनी गहराई में दबोच रहे हैं। मैं खुद से प्रश्न करती हूँ, क्या मैं अपने सपने पूरे करने के लिए सच में सक्षम हूँ? हम सभी कभी न कभी ऐसा महसूस अवश्य करते हैं, हम खुद के विषय व क्षमता पर प्रश्न उठाते हैं और अपना मोल नहीं जान पाते। हम

रोज कोई अवसर अपने इस संदेह के कारण गंवा देते हैं। मैंने इस विषय पर सोच-विचार किया और जाना कि हमारे जीवन की बाग-डोर हमारे ही हाथ में है। हम कभी भी अपनी कोई भी बुरी आदत छोड़ने की शुरुआत कर सकते हैं, कुछ नया सीख सकते हैं, निःसंकोच अपनी बातें और विचार प्रकट कर सकते हैं। ऐसे छोटे कदम हमारे जीवन को बदलने में कितना बड़ा योगदान दे सकते हैं। इस पीढ़ी के लिए भविष्य में कई मुश्किलों का सामना करना लिखा है। उसके लिए हमें हर डर व संकोच को दूर करना होगा और खुद पर विश्वास रखना होगा। हमें यह याद रखना है कि अगर नन्हे पंछी अपनी पहली उड़ान भरने के लिए हिम्मत ना करें तो वह कभी भी वृक्ष, पहाड़, नदी, व झरनों से गुजर कर आज़ादी का आनंद नहीं उठा पाएंगे।